SAMVAD E-JOURNAL
ISSN (Online) : 2583-8334
(International Peer-Reviewed Refereed Journal)
Volume 2, Issue-3, July to September: 2024
Published by Rangmati Publication http://www.rangmatipublication.com/

अमृता प्रीतम का आध्यात्मिक चिंतन

श्रीमती सरोज पाटील

शोधसार

अमृता प्रीतम हिंदी साहित्य की एक ख्याति नाम एवं विलक्षण प्रतिभा संपन्न साहित्यकार है, उनकी रचनात्मक प्रतिभा किसी एक विधा में बंध कर नहीं रही मूलतः अमृता जी को कवियत्री माना जाता है किंतु गद्य साहित्य के क्षेत्र में चाहे वह उपन्यास हो,, कहानी हो, निबंध हो,आत्मकथा हो या लेख सभी विधाओं पर अमृता जी ने अपनी लेखनी चलाई और एक से बढ़कर एक रचना हिंदी साहित्य जगत को दी। किंतु आध्यात्मिक क्षेत्र में भी अमृता जी का लेखन सर्वोत्तम रहा है उनकी पुस्तक 'मन मिर्ज़ा तन साहिबा',' अक्षरों की लीला',' संभोग से समाधि तक',' दरवेश की मेहंदी',' शक्ति कणों की लीला',' सातवीं किरण', 'अक्षर कुंडली', 'इश्क सहस्त्रनाम', 'अज्ञात का निमंत्रण' उनका दार्शनिक रूप इन रचनाओं में शिद्दत के साथ दिखाई देता है। उनके संबंध में 'रंजू भाटिया जी' का कथन यह गौर करने वाला है कि "अमृता प्रीतम एक कवि है लेखिका है लेकिन उनसे मिलने वाले लोग उन्हें लेखक, कवि कम और साधक और साधु अधिक होते हैं।" हम यह कह सकते हैं कि अमृता जी का साहित्य मानव मात्र को दी गई सर्वश्रेष्ठ सौगात है।

प्रमुख शब्दः-

कुतुबखाना, चिन्मन, ब्रह्माण्ड, महामिलन, अर्न्तचेतना, महाशक्ति, अख्तियार, जखरेज, जातीयकरण, स्याह दौर, नाजायज, निराकार, मिथहास, व्यक्तिकरण, हिफाज़त, मजमुई,

अमृता प्रीतम साहित्य के क्षेत्र में अत्यंत ख्यातनाम एवं विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार है। पंजाबी साहित्य में लोकप्रिय आवाज के तौर पर जानी जाने वाली अमृता की साहित्यिक अनुगंज विश्वस्तर पर सुनाई देती है। रसीदी टिकिट, वारिसशाह, पिंजर, अक्षर कुण्डलिनी, मनमिर्जा, तन साहिबा, एक थी सहारा, उनके हस्ताक्षर, कागज और कैनवास, नागमणि, पांच बरस, लम्बी सडक आदि अनेक कालजयी रचनाओं के माध्यम से अमृताजी ने साहित्य संसार को समृद्ध किया है।

अमृताजी की सृजनात्मक प्रतिभा किसी एक विधा में बंधकर नहीं रही। मूलतः अमृताजी को कवियत्री माना जाता है, किन्तु गद्य साहित्य के क्षेत्र में चाहे वह उपन्यास हो, कहानी हो, निबंध हो, आत्मकथा हो या लेख हो अमृताजी ने सभी विधाओं में सर्वश्रेष्ठ ही दिया है। उन्होने देश, समाज को अपने विचार, अपने शब्द, अपनी भावनाएँ, अपनी संवेदनाएँ देने के लिए साधना की है। वस्तुतः एक साहित्यकार शब्द साधना से बढ़कर संसार को और क्या दे सकती है?"

अमृता जी के लिए साहिर का प्रेम एक बहाना बन गया था। इसी प्रेम ने उन्हें लौकिक धरातल से परालौकिक धरातल की पहचान कराई। प्यार की वही कशीश अमृताजी को ईश्क-मिजाज़ी से इश्क हकीकी ओर खींचती चली गई। उनके लेखन में उनके आलेखो में, नजमों मे सुफीयाना अंदाज आता चला गया। वह प्रेम की पार लौकिकता की ओर इंगीत करता है। अमृता जी पहले लिखा करती थी 'दिल्ली की गलियों, तीसरी औरत, एक थी अनिता, नागमणि, कोरे कागज, जैसी रचनाएँ लिखती थी वह अब 'इश्क सहस्त्रनाम' 'अनंत की जिज्ञासा', 'अज्ञात का निमंत्रण', 'दरवेश की मेंहदी, शक्ति की लीला, सॉतवी किरण, एक मुट्ठी, अक्षरकुण्डली, इश्क अल्लाह-हक अल्लाह। इन रचनाओं के अध्ययन करने से यह ज्ञात होता है कि अमृता जी का अध्यात्म के प्रति विशेष लगाव था, इश्क हकीकी की अभिव्यक्ति देने वाली इन रचनाओं में उनका दर्शन समाया हुआ है। अमृता जी ने ईश्वर, धर्म, ब्रह्माण्ड, की उत्पत्ति के संबंधो को अपनी रचनाओं में विश्लेषित किया हैं।

"आदि बिन्दु की इच्छाशक्ति ने जब इजहार लिया-तरह-तरह की हरियाली में खिल उठी, कुदरत तरह-तरह से आकारमय हुई और इन्सान की काया में जो चेतना बनकर बस गई, इसी चेतना का नाम ईश्वर हुआ-

जिस रात के होठों ने कभी सपने का माथा चूम लिया व्मानों के पैरों में एक पायल सी बज रही, उसकी रात की यह असीम शक्ति का अहसास था, जिराका स्वप्नम दर्शन इन्सान की सीमित शक्ति ने पागा, तो उसके चिन्मन के पैरों में एक पायल सी बजने लगी और इंसान ने इस पायल की ध्वनि को जितना भर सुना, अपनी चेतना को जितना भर विकसित किया, अपनी आत्मा भर पहचाना, उसी का नाम धर्म हुआ इसीलिए हमारे आदि चिन्तन में देवता नाम का तत्व था, खिलाई शक्तियों के तत्व का। यह एक बहुत बड़ी पहचान थी, कि जो शक्ति कायामय हुई है, यही कुदरत के पत्ते पत्ते में धड़कती हैं। वही ब्रहाण्ड के कण-कण में बसी हुई और इंसान ने जब निराकार को आकार दिया तो उसमें ब्रह्माण्ड का विज्ञान बनाया हुआ था यही काया और चेतना का महामिलन हैं, जो 10 और 8 मिलकर 18 बनता है, आदि शक्ति की 18 भुजाओं में समाया हुआ-

सीम में असीम का दर्शन
छिण में सदैवता का दर्शन
काया में कायनात का दर्शन
आकार में निरकार का दर्शन।

महाशक्ति के संचार के संबंध में उनका व्यक्तव्य गहन आध्यात्मिकता को निरूपित करता हैं। "कोई व्यक्ति जब अपने अन्तर में सोई हुई शक्ति जगाता है, और जब आग की एक लकीर उसकी पीठ की हड्डी में से गुजरती है, तो उसकी काया में बिखरे हुए शक्ति के कण, उस आग की कशिश से एक दिशा अख्तियार करते हैं, और उससे योगी के गन-गरितष्क में जिस महाशक्ति का संचार होता है, ठीक कुण्डलिनी शक्ति के जागरण का अनुभव संभोग के उरा आलम में होता है, जहाँ प्राण और प्राण का मिलन होता है, और उस महामिलन में उस महाचेतना का दर्शन होता हैं, जो काया की सीमा में असीम को ढालते हुए उसे सीमा से मुक्त कर देती है अमृता जी ने आचार्य रजनीश (ओशों) को खूब पढ़ा, खूब चिन्तन किया और इतना ही नहीं उनके हर वक्तव्य को अपने जीवन में चरितार्थ भी किया।

उन्होने स्वयं कहा है "मैं समझती हूँ कि रजनीश हमारे युग की एक बहुत बड़ी प्राप्ति हैं, जिन्होनें सूरज की किरण को लोगों के अन्तर की ओर मोड़ दिया, और सहज मन से उस संभोग की बात कह गए। जो एक बीज और किरण का संभोग हैं, और जिससे खिले हुए फूल की सुगंध इन्सान को समाधि की ओर ले जाती है, मुक्ति की ओर ले जाती हैं" मोक्ष की ओर ले जाती हैं। मन की मिट्टी का जखरेज होना ही उसका मोक्ष है और उस मिट्टी में पड़े हुए बीज का फूल बनकर खिलना ही उसका मोक्ष है।"

अमृता जी ने अपनी रचना 'एक बीज की यात्रा में मानव जन्म सबंधी चिंतन बडी गहराई से किया है।

"मैं" एक निराकार मैं था....

यह मैं" का सकल्प था, जो पानी का रूप बना.

निराकार वह पहली कोख हैं जिसमें मैं आकारमय होता है... निराकार की कोख जो संकल्प का जबीज धारण करती हैं, उसकी गाथा हमारे मिथहास के ब्रह्मा से शुरू होती हैं, जो मानस पुत्रों को जन्म देता है..

फिर मैथुनी सृष्टि के समय यह बात उस ऋषि अनुसार संकल्प का यह बीज माँस की एक कोख चुनता हैं. चिन्तन से शुरू होती हैं, जिसके

सों संकल्प में की पहली चेतना होता हैं.

आगे यह चेतना माँस की कोख के स्थूलकणों से भी प्रभावित होती हैं और सूक्ष्म कणों से भी.... और माँ की कोख में से निकलकर जब यह "मैं" आकारमय होता हैं तो उसकी चेतना चारों ओर के वातावरण से प्रभावित होती हैं।"

बीज की यह यात्रा चेतना की एक लम्बी यात्रा हैं जो परिवार संबंधियों की आर्थिकता से लेकर उसके सामाजिक-धार्मिक और राजनैतिक हालत में अपनी पहचान खोजती है।

चेतना ने "मैं" का व्यक्तिकरण करना होता हैं, यदि एक बीज की यात्रा होती हैं, और व्यक्तिकरण के लिए मैं को इस तरह की ज़मीन चाहिए उसका पहला मुकाम "मैं" को उस पहचान से मिलता हैं, जो उसके घर, समाज ने उसकों दी होती हैं।

इस मुकाम पर सिर्फ पहचान नहीं मिलती। हिफाजत भी मिलती है।, और चेतना को एक तृप्ति का अहसास होता है।इस वक्त मजमुई चेतना, "मै" चेतना को तरंगित करती हैं।पंचतत्व से निर्मित यह काया किसलिए ईश्वर की सुन्दर रचना को जिन्दगी को कर्म क्षेत्र किसलिए दिया है। उसका मर्म आचार्य रजनीश ही जान पाए हैं।" "जब लहूँ माँस की यह काया एक उस मंदिर और एक मस्जिद सी हो जाती हैं, जहाँ पूजा के धूप की सुगंधि अन्तर से उठने लगती हैं, और कोई आयात भीतर से सुनाई देने लगती है.....

उसे चिन्तन की जमीन खोजनी होती हैं. यह एक ऐसा समय होता है, जब मन और मस्तिष्क की यात्रा करती हुई चेतना, आत्मा के द्वार पहुँच जाती हैं, और उसका अजल का इश्क उसकों अन्तर्कोण पर ले जाता हैं। उन्होने लिखा है- "आत्मा के बीज की ओर

पंचतत्व से निर्मित यह काया किसलिए ईश्वर की सुन्दर रचना को जिन्दगी को कर्म क्षेत्र किसलिए दिया है। उसका मर्म आचार्य रजनीश ही जान पाए हैं।" "जब लहूँ माँस की यह काया एक उस मंदिर और एक मस्जिद सी हो जाती हैं, जहाँ पूजा के धूप की सुगंधि अन्तर से उठने लगती हैं, और कोई आयात भीतर से सुनाई देने लगती है.....

उसे चिन्तन की जमीन खोजनी होती हैं. यह एक ऐसा समय होता है, जब मन और मस्तिष्क की यात्रा करती हुई चेतना, आत्मा के द्वार पहुँच जाती हैं, और उसका अजल का इश्क उसकों अन्तर्कोण पर ले जाता हैं। उन्होने लिखा है- "आत्मा के बीज की ओर प्रेम के पवन पानी की ओर समाधि के सूरज की ओर और काया की, मिट्टी के स्वीकार की ओर।"

धर्म के नाम पर अंधश्रृद्धा और भेदभाव की दृष्टि रखने वालों को अमृता जी इसका वास्तविक अर्थ समझाती हुई कहती हैं- "जब औरतों के मंदिर में प्रवेश पर लगी पाबन्दी की आवाज़ मैने राज्यसभा में उठाई, तो मुझे रजनीश याद हो आए, जो आहिस्ता से हर मदिर के कानों में कह रहें है-"अरे! सन्यासी भी कभी हिन्दु मुसलमान और जैन होता है। क्या सन्यास इनमें बंधेगा ? अटकेगा ? जिस दिन समाधि फलित होगी, क्या वो उस दिन हिन्दु रह जाएगा। अगर उस दिन भी हिन्दु रह गए, तो समाधि झूठी होगी। क्या उस दिन तुम पुरुष और स्त्री रह जाओंगे ?

अगर तुम पुरुष और स्त्री रह गए तो समाधि झूठी।"

अमृताजी का यह दर्शन उन्हें गहन चिंतक और विचारक की श्रेणी में खड़ा करता है। कबीर की तरह ढाई आखर प्रेम का लिखने वाली अमृता महान साहित्यकार के साथ महान संत भी है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. मनमिर्जा तन साहिबा।

अमृता प्रीतम

2. अक्षरों की लीला।

अमृता प्रीतम

3. रसीदी टिकिट

अमृता प्रीतम

4. संभोग से समाधि तक

आचार्य रजनीश (ओशो)

5. एक बीज की यात्रा

अमृता प्रीतम